बात अगर साधारण विज्ञापन की हो तो भी सहनीय है किन्तु इन्होंने एक अभद्र रूप धारण कर लिया है जिसके बारे में मैं चर्चा करना उचित नही समझता । विज्ञापन इतने अश्लील और अभद्र हैं कि इनको देखकर स्वयं ही शर्म आ जाती है । शहर में बड़े-बड़े बोर्ड प्रचार के लिए लगे हुए हैं कि "पहली नजर, पहली खबर "। यही नही, समाचार चैनलों तथा गंभीर विषयों पर चर्चा के वक्त भी इस तरह के विज्ञापन आते हैं । मतलब कि बाकी प्रोग्राम छोड़िए, अब समाचार भी हम अपने परिवार के साथ नहीं देख सकते । मेरे विचार से इस तरह के विज्ञापन हमारी संस्कृति और सभ्यता से मेल नहीं खाते । वैसे ही हमारे समाज के नैतिक मूल्यों में काफी गिरावट आ चुकी है, इस तरह के विज्ञापन हमारी नई पीढ़ी को अच्छे नैतिक मूल्यों का सबक नहीं दे रहे हैं बल्कि उसको गिरा रहे हैं ।

अतः मैं सरकार से अनुरोध करना चाहता हूं कि इस तरह के अश्लील और अभद्र विज्ञापनों पर तुरंत रोक लगाई जाए और एक संहिता बनाई जाए जिससे कि हम अपनी संस्कृति और सभ्यता की रक्षा कर सकें ।

श्री रमा शंकर कौशिक (उत्तर प्रदेश): उपसभापति महोदया, मैं माननीय सांसद से स्वयं को संबद्ध करता हूं । महोदया, यहां तक हो रहा है कि नमक का विज्ञापन आ रहा था और महात्मा गांधी की तस्वीर उसमें दिखाई जा रही है । इस तरह की बातें हो रही हैं ।

श्री बालकवि बैरागी (मध्य प्रदेश): महोदया, मैं माननीय सदस्य से स्वयं को संबद्ध करता हूं।

श्रीमती सविता शारदा (गुजरात): महोदया, मैं माननीय सदस्य से स्वयं को संबद्ध करती हूं।

SHRI M.P. ABDUSSAMAD SAMADANI (Kerala) : Madam, I also associate myself with what Shri Dara Singh Chauhan has stated.

उपसभापति : श्री मनमोहन सामल । बायो डायवर्सिटी पर तो हाउस में डिसकशन हो चुका है। आप क्या खाली उड़ीसा तक ही सहमत हैं ?

Need to protect biodiversity and ecology of coastal line of Orissa

SHRI MAN MOHAN SAMAL (Orissa): Madam, I wish to draw the attention of the Government to the problem of ecological imbalance taking place in the area, from the Mahanadi river mouth to Dhamara and Devi river delta, which comes to 700 square kilometres. Unfortunately, due to mindless human activity like cutting down of mangrove forests, cultivation, prawn culture, etc., this vast stretch of mangrove forests, which acted as a natural wall against cyclonic storm and sea wave, has been reduced to

mere 215 square kilometres. This area covers four coastal districts of Kendrapara, Bhadrak, Balasore and Jagatsingpur. Had the mangrove forests been there in its original form, the impact of 1999 super cyclone would have been much less. Damage has been caused to the ecology of the area which was the natural habitat of a variety of biodiversity consisting of 63 variety of mangroves, 174 species of birds, 26 species of mammals and 44 species of reptiles. I urge upon the hon. Minister of Environment and Forests to take urgent steps to protect the ecological balance and environment of this area by engaging not only Government agencies but also NGOs under a time-bound programme. Thank you.

SHRI SURENDRA LATH (Orissa): Madam, I associate myself with what Shri Man Mohan Samal has stated.

Need to supply Hindi dailies and magazines in flight and at airport lounges

प्रो0 राम देव भंडारी (बिहार): उपसभापति महोदया, इंडियन एयरलाइन्स के जहाजों में तथा एयरपोर्ट के लाउन्ज में राजभाषा हिन्दी के समाचार पत्रों और पत्रिकाओं की भारी कमी रहती है । अंग्रेजी के समाचार पत्र और पत्रिकाएं भरे होते हैं और हिन्दी के खोजने पर भी नहीं मिलते हैं। लाउन्ज तथा जहाजों में पूछने पर इधर-उधर खोजा जाता है और बमुश्किल एकाध उपलब्ध कराया जाता है और अक्सर वह भी नहीं । जहाजों में "इंडिया टुडे" और "कादम्बिनी" जैसी कभी-कभार एकाध पत्रिका दिखाई पड़ जाती है जबकि हिन्दी की "आउटलुक" "प्रथमप्रवक्ता" जैसी कई पढ़ने योग्य पत्रिकाएं बाजार में उपलब्ध हैं । "हिन्दी" जिसे भारतीय संविधान ने राजभाषा के रूप में स्वीकार किया है, की इस प्रकार की उपेक्षा करना विभाग का अपने संवैधानिक दायित्वों से मुकरना है, हिन्दी को उसके अधिकार से वंचित करना है । मेरा सरकार से अनुरोध है कि एयरपोर्ट के लाउन्ज तथा हवाई जहाजों में आवश्यक संख्या में हिन्दी समाचार पत्रों और पत्रिकाओं की आपूर्ति करे जिससे संविधान की मूल भावनाओं का आदर हो । धन्यवाद ।

श्री बालकवि बैरागी (मध्य प्रदेश): महोदया, मैं माननीय सदस्य से स्वयं को संबद्ध करता हूं। हिन्दी की पत्र-पत्रिकाएं इतने अपमानजनक स्तर पर लाकर देते हैं और इतना हंसकर देते हैं कि जैसे हम हिन्दी की पत्रिकाएं मांगकर कोई अपराध कर रहे हैं । इस पर सरकार को गंभीरता से विचार करना चाहिए ।

श्री दारा सिंह चौहान (उत्तर प्रदेश): महोदया, मैं माननीय सदस्य से स्वयं को संबद्ध करता हूं ।

श्री रमा शंकर कौशिक (उत्तर प्रदेश) : मैडम, "स्वागत" जो अंग्रेज़ी में छपता है, वह हिंदी वाले "स्वागत" से चार गुना बड़ा होता है और हिंदी वाला "स्वागत" जो एयरलाइन्स छापती है, वह केवल थोड़े से पन्नों का होता है ।